

पञ्चदशः पाठः



प्रहेलिकाः

[पहेलियाँ मनोरञ्जन की प्राचीन विधा है। ये प्रायः विश्व की सारी भाषाओं में उपलब्ध हैं। संस्कृत के कवियों ने इस परम्परा को अत्यन्त समृद्ध किया है। पहेलियाँ जहाँ हमें आनन्द देती हैं, वहीं समझ-बूझ की हमारी मानसिक व बौद्धिक प्रक्रिया को तीव्रतर बनाती हैं। इस पाठ में संस्कृत प्रहेलिका (पहेली) बूझने की परम्परा के कुछ रोचक उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं।]

कस्तूरी जायते कस्मात्?

को हन्ति करिणां कुलम्?

किं कुर्यात् कातरो युद्धे?

मृगात् सिंहः पलायते ॥1॥

सीमन्तिनीषु का शान्ता?

राजा कोऽभूत् गुणोत्तमः?

विद्वद्भिः का सदा वन्द्या?

अत्रैवोक्तं न बुध्यते ॥2॥

कं सज्जघान कृष्णः?

का शीतलवाहिनी गङ्गा?

के दारपोषणरताः?

कं बलवन्तं न बाधते शीतम् ॥3॥

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः

त्रिनेत्रधारी न च शूलपाणिः।

त्वग्वस्त्रधारी न च सिद्धयोगी

जलं च विभ्रन्न घटो न मेघः ॥4॥

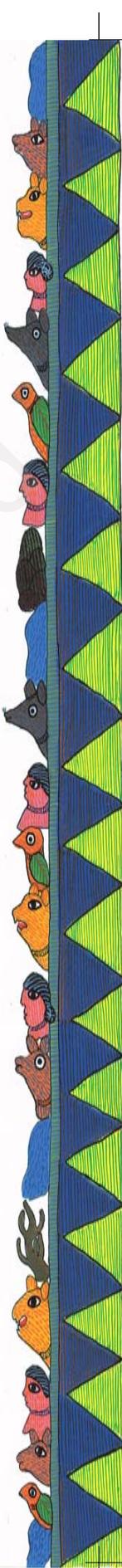
भोजनान्ते च किं पेयम्?
जयन्तः कस्य वै सुतः?
कथं विष्णुपदं प्रोक्तम्?
तक्रं शक्रस्य दुर्लभम् ॥5॥

प्रहेलिकानामुत्तरान्वेषणाय सङ्केताः

| | | |
|----------------------------|---|--|
| प्रथमा प्रहेलिका | - | अन्तिमे चरणे क्रमशः त्रयाणां प्रश्नानां त्रिभिः पदैः उत्तरं दत्तम्। |
| द्वितीया प्रहेलिका | - | प्रथम-द्वितीय-तृतीय-चरणेषु प्रथमस्य वर्णस्य अन्तिमवर्णेन संयोगात् उत्तरं प्राप्यते। |
| तृतीया प्रहेलिका | - | प्रत्येकं चरणे प्रथमद्वितीययोः प्रथमत्रयाणां वा वर्णानां संयोगात् तस्मिन् चरणे प्रस्तुतस्य प्रश्नस्य उत्तरं प्राप्यते। |
| चतुर्थप्रहेलिकायाः उत्तरम् | - | नारिकेलफलम्। |
| पञ्चमप्रहेलिकायाः उत्तरम् | - | प्रथम-प्रहेलिकावत्। |



| | | |
|----------------------|---|---------------------------|
| हन्ति | - | मारता/मारती है |
| कातरः | - | कमजोर |
| सीमन्तिनीषु | - | नारियों में |
| कोऽभूत् (कः+अभूत्) | - | कौन हुआ |
| सञ्जघान | - | मारा |
| कंसञ्जघान (कंस+जघान) | - | कंस को मारा |
| शीतलवाहिनी | - | ठंडी धारा वाली |
| काशीतलवाहिनी | - | काशी की भूमि पर बहने वाली |



| | | |
|-----------------------------------|---|---------------------------------|
| दारपोषणरताः | - | पत्नी के पोषण में संलग्न |
| केदारपोषणरताः | - | खेत के कार्य में संलग्न |
| कंबलवन्तम् | - | वह व्यक्ति जिसके पास कंबल है |
| वृक्षाग्रवासी (वृक्ष+अग्रवासी) | - | पेड़ के ऊपर रहने वाला |
| पक्षिराजः | - | पक्षियों का राजा (गरुड़) |
| त्रिनेत्रधारी | - | तीन नेत्रों वाला (शिव) |
| शूलपाणिः | - | जिनके हाथ में त्रिशूल है (शंकर) |
| त्वग् | - | त्वचा, छाल |
| बिभ्रन् | - | धारण करता हुआ |
| विष्णुपदम् | - | स्वर्ग, मोक्ष |
| तक्रम् | - | छाछ, मटा |
| शक्रस्य | - | इन्द्र का |

अभ्यासः



1. श्लोकांशेषु रिक्तस्थानानि पूरयत-

- (क) सीमन्तिनीषु का राजा गुणोत्तमः।
 (ख) कं सञ्जघान का गङ्गा?
 (ग) के कं न बाधते शीतम्।।
 (घ) वृक्षाग्रवासी न च न च शूलपाणिः।

2. श्लोकांशान् योजयत-

क
 किं कुर्यात् कातरो युद्धे
 विद्वद्भिः का सदा वन्धा
 कं सञ्जघान कृष्णः
 कथं विष्णुपदं प्रोक्तं

ख
 अत्रैवोक्तं न बुध्यते।
 तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।
 मृगात् सिंहः पलायते।
 काशीतलवाहिनी गङ्गा।

3. उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुपयुक्तकथनानां समक्षं न इति लिखत-

यथा- सिंहः करिणां कुलं हन्ति।

आम्

(क) कातरो युद्धे युद्ध्यते।

(ख) कस्तूरी मृगात् जायते।

(ग) मृगात् सिंहः पलायते।

(घ) कंसः जघान कृष्णम्।

(ङ) तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्।

(च) जयन्तः कृष्णस्य पुत्रः।

4. अधोलिखितानां पदानां लिङ्गं विभक्तिं वचनञ्च लिखत-

| पदानि | लिङ्गम् | विभक्तिः | वचनम् |
|--------------|--------------|----------|----------|
| यथा- करिणाम् | पुँल्लिङ्गम् | षष्ठी | बहुवचनम् |
| कस्तूरी | | | |
| युद्धे | | | |
| सीमन्तिनीषु | | | |
| बलवन्तम् | | | |
| शूलपाणिः | | | |
| शक्रस्य | | | |

प्रहेलिका:

105

5. कोष्ठकान्तर्गतानां पदानामुपयुक्तविभक्तिप्रयोगेन अनुच्छेदं पूरयत-

एकः काकः (आकाश) डयमानः आसीत्। तृषार्तः सः (जल)
अन्वेषणं करोति। तदा सः (घट) अल्पं (जल) पश्यति।
सः (उपल) आनीय (घट) पातयति। जलं
(घट) उपरि आगच्छति। (काक) सानन्दं जलं पीत्वा तृप्यति।

योग्यता-विस्तारः

प्रस्तुत पाठ में दी गयी पहेलियों के अतिरिक्त कुछ अन्य पहेलियाँ अधोलिखित हैं।
उन्हें पढ़कर स्वयं समझने की कोशिश करें और ज्ञानवर्धन करें यदि न समझ पायें तो
उत्तर देखें।

(क) चक्री त्रिशूली न हरो न विष्णुः।

महान् बलिष्ठो न च भीमसेनः।

स्वच्छन्दगामी न च नारदोऽपि

सीतावियोगी न च रामचन्द्रः॥

(ख) न तस्यादिर्न तस्यान्तः मध्ये यस्तस्य तिष्ठति।

तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदि जानासि तद्वद॥

(ग) अपदो दूरगामी च साक्षरो न च पण्डितः।

अमुखः स्फुटवक्ता च यो जानाति स पण्डितः॥

उत्तर-(क) वृषभः, (ख) नयनम्, (ग) पत्रम्